अद्भुत संस्कृत करे चमत्कृत

५२ पृष्ठों में
रोचक श्लोक-संकलन

(संकलनकर्ता)
प्रशान्त अग्रवाल
बरेली, उ.प्र.

~ नम्र निवेदन ~

संस्कृत इसलिए श्रेष्ठ नहीं है क्योंकि वह हमारी है, वरन् संस्कृत इसलिए श्रेष्ठ है, क्योंकि :

* यह पूर्णतः विज्ञानसम्मत और तर्कसंगत भाषा है।
* यह संसार की उच्चतम अभिव्यक्ति की भाषा है।
* यह सब भाषाओं की स्रोत है, जननी है।
* इसका वाचन स्वास्थ्यसम्मत भी है।
* यह संस्कार की भाषा है।
* यह देवभाषा है।

यह पुस्तिका इसी गौरवबोध को जगाने/बढ़ाने की दिशा में एक लघु प्रयास है जिसके ५२ पृष्ठों में संस्कृत के उन श्लोकों को संकलित किया गया है जिनमें सहसा एक कौतुक परिलक्षित होता है और जो न केवल रचनाकारों की मेधा को दर्शाते हैं, अपितु संस्कृत की समृद्धता, गहनता, विलक्षणता और सक्षमता की भी एक झाँकी दिखाते हैं (यद्यपि संस्कृत का गौरव-लोक इससे कहीं अधिक गहन और व्यापक है)। स्मरण रहे, ये श्लोक इस प्रकार के अनगिनत श्लोकों के अथाह समुद्र की केवल कुछ लहरें-मात्र ही हैं।

यद्यपि संकलनकर्ता संस्कृत का विद्वान् नहीं, अपितु प्रेमी-मात्र है, तथापि इन श्लोकों को विविध स्रोतों से संकलित करने, उनके मूल पाठ, स्रोत, अर्थ, शुद्धि-अशुद्धि के परस्पर मिलान करके मोबाइल पर ही व्यवस्थित स्वरूप देने में पर्याप्त श्रम किया गया है। आशा है, सुधी पाठकगण संस्कृत की श्रेष्ठता के प्रति अपने मनोभावों में और अधिक प्रगाढ़ता लाकर तथा इसके प्रसार द्वारा संस्कृत के प्रति अधिक अनुकूल वातावरण का सृजन करके इस श्रम को सार्थक करेंगे।

प्रभु सदा सभी का मंगल करें, इसी शुभेच्छा के साथ.....

(संकलनकर्ता)
प्रशान्त अग्रवाल
४० बजरिया मोतीलाल,
बरेली (उत्तर प्रदेश)
भाद्रपद अमावस्या, विक्रम सम्वत् २०७८

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : १

सभी ३३ मूल व्यंजन क्रमानुसार

कः खगौघाङचिच्छौजा झाञ्ज्ञोऽटौठीडडण्ढणः।
तथोदधीन् पफर्बाभीर्मयोऽरिल्वाशिषां सहः ।।

(मूल स्रोत : अज्ञात)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२६३)

[अर्थ]

कौन (कः) है जो पक्षिसमूह (खगौघ) को इकट्ठा करता है, जो चित् यानी संवित् को नष्ट करने के सामर्थ्य से रहित (अचिच्छौज) है, जो परबलभक्षक (झान्) विद्वान् (ज्ञः) है, जो अटों यानी (रणांगण में भ्रमणशील) सुभटों के हन्ताओं का ईड् यानी स्वामी (अटौठीड्) है, जो अचपल या स्थिर (अडण्ढण) है, जो भयरहित (अभीः) है तथा जिसने समुद्रों को (उदधीन्) पूरित कर दिया (पफर्ब) है। (अब अन्त में इस प्रश्न का उत्तर है कि) वह शत्रुनाशक (अरिलु) आशीर्वचनों के (आशिषां) योग्य (सहः) मय नामक दैत्यराज है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २

मात्र १ वर्ण (न) का प्रयोग

न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु ।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत् ।।

(मूल स्रोत : भारविकृत किरातार्जुनीयम्, १५/१४)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२६२)

[अर्थ]

(शिवगणों को सम्बोधित करके अर्जुन कहता है) हे नानानन (नाना मुख वालों)! वह मनुष्य मनुष्य नहीं, जो अपने से कमजोर से भी पराजित हो जाये और वह भी मनुष्य नहीं है, जो अपने से कमजोर को मारे। जिसका नेता पराजित न हुआ हो, वह हार जाने के बाद भी अपराजित है। और जो उसे मारता है जो पहले से ही आहत है, वह मनुष्य नहीं है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ३

मात्र १ वर्ण (द) का प्रयोग

दाददो दुद्ददुद्दादी दाददो दूददीददोः ।
दुद्दादं दददे दुद्दे दादाददददोऽददः ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/११४)

[अर्थ]

(वर)दान करने वाले, दुष्टों को उपताप देने वाले, शुद्धि देने वाले, परिताप देने वाले दुष्टों के नाशक बाहु वाले और दाताओं तथा अदाताओं दोनों को देने वाले श्रीकृष्णभगवान् ने दुद्द (दुःखदायी-शत्रु) पर दुःखदायी बाण को (चला) दिया।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४

मात्र १ वर्ण (न) का प्रयोग

नूनं नुन्नानि नानेन नाननेनाननानि नः ।
नानेना ननु नानूनेनैनेनानानिनो निनीः ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/९५)

[अर्थ]

इस वीर ने अपने सामर्थ्य से हमारे सामर्थ्यों को परिक्षिप्त नहीं किया है यह नहीं, अर्थात् हमें निश्चय ही सामर्थ्यशून्य कर दिया है। इस वीर के सामने अपने बलवान पुरुषों को ले जाने की इच्छावाला हमारा स्वामी निरपराधी नहीं अर्थात् अपराधी है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ५

मात्र १ वर्ण (क) का प्रयोग

कः कौ के केककेकाकः काककाकाकक: ककः ।
काकः काकः ककः काकः कुकाकः काकक: कुकः ।।

(मूल स्रोत : स्वामी रामभद्राचार्यकृत श्रीभार्गवराघवीयम्, २०/९२)

[अर्थ]

परब्रह्म (कः) [श्री राम] पृथ्वी (कौ) और साकेतलोक (के) में [दोनों स्थानों पर] सुशोभित हो रहे हैं। उनसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में आनन्द निःसृत होता है। वह मयूर की केकी (केककेकाकः) एवं काक (काकभुशुण्डि) की काँव-काँव (काककाकाकक:) में आनन्द और हर्ष की अनुभूति करते हैं। उनसे समस्त लोकों (ककः) के लिए सुख का प्रादुर्भाव होता है। उनके लिए [वनवास के] दुःख भी सुख (काकः) हैं। उनका काक (काकः) [काकभुशुण्डि] प्रशंसनीय है। उनसे ब्रह्मा (ककः) को भी परमानन्द की प्राप्ति होती है। वह [अपने भक्तों को] पुकारते (काकः) हैं। उनसे कूका अथवा सीता (कुकाकः) को भी आमोद प्राप्त होता है। वह अपने काक [काकभुशुण्डि] को पुकारते (काकक:) हैं और उनसे सांसारिक फलों एवं मुक्ति का आनन्द (कुकः) प्रकट होता है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ६

मात्र १ वर्ण (क) का प्रयोग

काककाक ककाकाक कुकाकाक ककाक क ।
कुककाकाक काकाक कौकाकाक कुकाकक ।।

(मूल स्रोत : स्वामी रामभद्राचार्यकृत श्रीभार्गवराघवीयम्, २०/९३)

[अर्थ]

हे मेरे एकमात्र प्रभु ! आप जिनसे काक [जयंत] के (काककाक) शीश पर दुःख [रूपी दण्ड प्रदान किया गया] था; आप जिनसे समस्त प्राणियों (ककाक) में आनन्द निर्झरित होता है; कृपया पधारें, कृपया पधारें (आक आक)। हे एकमात्र प्रभु! जिनसे सीता (कुकाक) प्रमुदित हैं; कृपया पधारें (आक)। हे मेरे एकमात्र स्वामी! जिनसे ब्रह्माण्ड (कक) के लिए सुख है; कृपया आ जाइए (आक)। हे भगवन (क)! हे एकमात्र प्रभु ! जो नश्वर संसार (कुकक) में आनन्द खोज रहे व्यक्तियों को स्वयं अपनी ओर आने का आमंत्रण देते हैं; कृपया आ जाएँ, कृपया पधारें (आक आक)। हे मेरे एकमात्र नाथ ! जिनसे ब्रह्मा एवं विष्णु (काक) दोनों को आनन्द है; कृपया आ जाइए (आक)। हे एक ! जिनसे ही भूलोक (कौक) पर सुख है; कृपया पधारें, कृपया पधारें (आक आक)। हे एकमात्र प्रभु ! जो (रक्षा हेतु) दुष्ट काक द्वारा पुकारे जाते हैं (कुकाकक); [कृपया पधारें।]

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ७

मात्र १ वर्ण (ल) का प्रयोग

लोलालालीललालोल लीलालालाललालल ।
लेलेलेल ललालील लाल लोलील लालल ।।

(मूल स्रोत : स्वामी रामभद्राचार्यकृत श्रीभार्गवराघवीयम्, २०/९४)

[अर्थ]

हे एकमात्र प्रभु! जो अपने घुँघराले केशों की लटों की एक पंक्ति के साथ (लोलालालीलल) क्रीड़ारत हैं; जो कदापि परिवर्तित नहीं होते (अलोल); जिनका मुख [बाल] लीलाओं में श्लेष्मा से परिपूर्ण है (लीलालालाललालल); जो [शिव धनुर्भंग] क्रीड़ा में पृथ्वी की सम्पत्ति [सीता] को स्वीकार करते हैं (लेलेलेल); जो मर्त्यजनों की विविध सांसारिक कामनाओं का नाश करते हैं (ललालील), हे बालक [रूप राम] (लाल)! जो प्राणियों के चंचल प्रकृति वाले स्वभाव को विनष्ट करते हैं (लोलील); [ऐसे आप सदैव मेरे मानस में] आनन्द करें (लालल)।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ८

मात्र १ स्वर (उ) का प्रयोग

उरुगुं द्युगुरुं युत्सु चुक्रुशुस्तुष्टुवुः पुरु ।
लुलुभुः पुपुषुर्मुत्सु मुमुहुर्नु मुहुर्मुहुः ।।

(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२७६)

[अर्थ]

(देवगण) उरुगुं (विशद वाणी वाले) द्युगुरुं (स्वर्गाचार्य बृहस्पति को) युत्सु (युद्ध के लिए) चुक्रुशुः (जोर-जोर से पुकारने लगे) (उनकी) पुरु (नाना प्रकार से) तुष्टुवुः (स्तुति करने लगे); (क्योंकि) मुत्सु (प्रमोद की अवस्था में वे) लुलुभुः (प्रसन्न रहते थे), पुपुषुः (पुष्ट रहते थे) नु (और) मुहुर्मुहुः (बार-बार) मुमुहुः (मोहित होते थे)।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ९

मात्र १ स्वर (उ) का प्रयोग

मुमुहुर्मुमुषुर्लुलुभुश्चुचुरुर्जुघुषुः पुपुषुर्जुगुपुश्चुकुपुः ।
थुथुडुश्चुचुपुर्जुहुवुस्तुतुषुर्बुबुधुर्द्युगुरुं पुरुगुं मुमुदुः ।।

(श्रीसुरेन्द्रमोहनमिश्र रचित)

[अर्थ]

उन्होंने मोह किया, लूटा, लोभ किया, चुराया, उद्घोष किया, [कुविचारों को] पोसा, [सब कुछ] गुप्त रखा, कोप किया, छुपाया, गमन किया, हवन किया, और [किसी प्रकार] संतोष किया। [फिर] उन्होंने वाचस्पति देवगुरु (बृहस्पति) को जाना और [तभी] मोद (आनन्द) किया।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : १०

मात्र १ स्वर (ऐ) का प्रयोग

वैधैरैनैरैशैरैन्द्रैरैजैरैलैर्जैनैः सैद्धैः ।

मैत्रैर्नैकैर्धैर्यैर्वैरैर्दैः स्वैः स्वैरैर्दैवस्तैस्तैः ।।

(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२७७)

[अर्थ]

(अप्राप्त)

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ११

मात्र १ स्वर (आ) का प्रयोग

सामायामामाया मासा मारानायायानारामा ।
यानावाराराावानाया मायारामा मारायामा ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/८२)

[अर्थ]

वह जो प्रभूत विरह-ज्वर के द्वारा सन्तप्त करने वाली है, जो लक्ष्मी के समान सुन्दर है, कामदेव का उत्पादन-रूप जिसका आगमन होता है और जिसके पैरों पर आवेष्टित नूपुरों की मंजुल ध्वनि ही कामीजनों के लिए जाल के समान है, वह अति विचित्र मनोहर रूप वाली रमणी चन्द्र-निशा के साथ-साथ मेरे नाश के लिए है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : १२

मात्र १ व्यंजन, १ स्वर का प्रयोग

यायायायायायायायायायायायायायाया ।
यायायायायायायायायायायायायायाया ।।

(वेदांत देशिककृत पादुका-सहस्रं, ३०/९३६)

[माना जाता है कि उक्त पुस्तक के १००८ श्लोकों की रचना कवि ने एक रात्रि के एक याम (३ घंटे) में की थी।]

[संस्कृत में अन्वय]
यायाया, आय, आयाय, अयाय, अयाय, अयाय, अयाय, अयाया, यायाय, आयायाय, आयाया, या, या, या, या, या, या, या, या।

[अर्थ]

भगवान को सुशोभित करने वाली पादुकाएं, जो सभी प्रकार के मंगल और शुभ की प्राप्ति में सहायक हैं, जो ज्ञान देती हैं, जो (भगवान को अपना बना लेने की) इच्छा की कारक हैं, जो उन सबको हटाती हैं जो शत्रुतापूर्ण हैं, जिन्होंने प्रभु को प्राप्त किया है, जिनका एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने-जाने में उपयोग होता है, जिनके द्वारा संसार के सभी स्थानों तक पहुँचा जा सकता है, ये पादुकाएं भगवान विष्णु के लिए हैं।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : १३

१ पंक्ति में १ स्वर का प्रयोग

क्षितिस्थितिमितिक्षिप्तिविधिविन्निधिसिद्धिलिट् ।
मम त्र्यक्ष नमद्दक्ष हर स्मरहर स्मर ।।

(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२७८)

[अर्थ]

ओ भगवान् शिव, त्रिनेत्रधारी, अस्तित्व के ज्ञाता, धरा के मापक व संहारक, अष्टसिद्धि, नवनिधि के भोक्ता, आप, जिन्होंने दक्ष एवं कामदेव का संहार किया, मुझे स्मरण करें।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : १४

१ पंक्ति में १ स्वर का प्रयोग

श्रीदीप्ती ह्रीकीर्ती धीनीती गीःप्रीती ।
एधेते द्वे द्वे ते ये नेमे देवेशे ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/८६)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२७९)

[अर्थ]

लक्ष्मी, कान्ति, लज्जा, यश, बुद्धि, नीति, वाणी तथा प्रीति ये गुण दो-दो करके आप में वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं जो इन्द्र में भी नहीं हैं।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : १५

सम्पूर्ण श्लोक का विलोम दूसरा श्लोक

(मूल श्लोक)

वंदेऽहं देवं तं श्रीतं रंतारं कालं भासा यः ।
रामो रामा धीराप्यागो लीलामारायोध्ये वासे ।।

(विलोम श्लोक)

सेवाध्येयो रामालाली गोप्याराधी मारामोराः ।
यस्साभालंकारं तारं तं श्रीतं वन्देऽहं देवम् ।।

(मूल स्रोत : वेंकटाध्वरि रचित राघवयादवीयम्, प्रथम श्लोक)
(पूरे ग्रंथ के सभी ३० (६०) श्लोक इसी प्रकार अनुलोम-विलोम हैं।)

[अनुलोम अर्थ]

मैं उन भगवान श्रीराम के चरणों में प्रणाम करता हूँ जिनके हृदय में सीताजी रहती हैं तथा जिन्होंने अपनी पत्नी सीता के लिए सह्याद्रि की पहाड़ियों से होते हुए लंका जाकर रावण का वध किया तथा वनवास पूरा कर अयोध्या वापस लौटे।

[विलोम अर्थ]

मैं रूक्मिणी तथा गोपियों के पूज्य भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों में प्रणाम करता हूँ जो सदा ही माँ लक्ष्मी के साथ विराजमान हैं तथा जिनकी शोभा समस्त रत्नों की शोभा को हर लेती है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : १६

सम्पूर्ण श्लोक का विलोम दूसरा श्लोक

(मूल श्लोक)

वाहनाजनि मानासे साराजावनमा ततः ।
मत्तसारगराजेभे भारीहावज्जनध्वनि ।।

(विलोम श्लोक)

निध्वनज्जवहारीभा भेजे रागरसात्तमः ।
ततमानवजारासा सेना मानिजनाहवा ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/३३-३४)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/३०१-३०२)

[मूल श्लोक का अर्थ]

तदनन्तर शत्रुओं के दर्प को दूर करने वाले एवं मदोन्मत्त बलवान गजराजों से युक्त उस श्रेष्ठ युद्ध में उत्साहयुक्त सैनिकों के कोलाहल से युक्त सब कार्य भलीभाँति पूर्ण हुआ।

[विलोम श्लोक का अर्थ]

उस सेना में वेग के साथ मनोहर गजराज चिग्घाड़ रहे थे। चारों ओर सैनिकों का ऐसा भारी कोलाहल मचा हुआ था मानों सैनिकगण अपने ही में एक-दूसरे से युद्ध कर रहे थे। उस समय वह सारी सेना क्रोध के वेग से अन्धी हो रही थी।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : १७

सम्पूर्ण श्लोक का विलोम दूसरा श्लोक

(मूल श्लोक)

निशितासिरतोऽभीको न्येजतेऽमरणा रुचा ।
सारतो न विरोधी न स्वाभासो भरवानुत ।।

(विलोम श्लोक)

तनुवारभसो भास्वानधीरोऽविनतोरसा ।
चारुणा रमते जन्ये कोऽभीतो रसिताशिनि ।।

(मूल स्रोत : भारविकृत किरातार्जुनीयम्, १५/२२-२३)

[मूल श्लोक का अर्थ]

हे मृत्युरहित प्रमथगण ! हमारा यह विरोधी तीक्ष्ण खड्गधारी है, निर्भय है, तेजस्वी एवं आकृति से रमणीय है। युद्ध का भार उठाने में सहिष्णु है, वह बलवान शत्रु से भी कम्पित नहीं होता।

[विलोम श्लोक का अर्थ]

कवच से सुशोभित, तेजस्वी, मनोहर एवं उन्नत वक्षस्थल वाले किंतु फिर भी अधीर इस वीर के समान दूसरा ऐसा कौन है जो इस महाभयंकर युद्ध में जिसके घोर नाद से ही विश्व के जीव-जन्तुओं के प्राण निकल जायें, निर्भीक होकर खेलता रहेगा।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : १८

पूर्वार्द्ध का विलोम उत्तरार्द्ध

तं भूसुतामुक्तिमुदारहासं वंदे यतो भव्यभवं दयाश्रीः।

श्रीयादवं भव्यभतोयदेवं संहारदामुक्तिमुतासुभूतम्।।

(मूल स्रोत : सूर्यकविरचित श्रीरामकृष्णविलोमकाव्यम्, प्रथम श्लोक)

(प्रत्येक पद्य के पूर्वार्द्ध में रामकथा है, तो उत्तरार्द्ध में कृष्णकथा।)

[अर्थ]

मैं सीता को मुक्त कराने के लिए उनकी (श्रीराम की) वन्दना करता हूँ, जिनकी हँसी उदार है, जिनका अवतार भव्य है और जिनसे हर जगह दया और भव्यता उत्पन्न होती है।

मैं उन कृष्ण को प्रणाम करता हूँ जो यदुकुल के वंशज हैं, जो सूर्य और चन्द्रमा के स्वामी हैं, जिन्होंने उसे (पूतना को) भी मुक्त कर दिया जो उनके जीवन का अन्त चाहती थी और जो ब्रह्माण्ड की आत्मा हैं।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : १९

पूर्वार्द्ध का विलोम उत्तरार्द्ध

निशितासिरतोऽभीको न्येजतेऽमरणा रुचा ।
चारुणा रमते जन्ये को भीतो रसिताशिनि ।।

(मूल स्रोत : अज्ञात)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/३००)

[अर्थ]

ओ अविनाशी! वास्तव में, तेज धार वाली तलवारों का प्रेमी निर्भय व्यक्ति सुंदर रथों से सज्जित और मानवों के भक्षक दानवों से भरे इस रण में कभी भी भयभीत की तरह नहीं काँपता।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २०

पूर्वार्द्ध का विलोम उत्तरार्द्ध

तं श्रिया घनयानस्तरुचा सारतया तया ।
यातया तरसा चारुस्तनयानघया श्रितं ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/८८)

[अर्थ]

(अप्राप्त)

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २१

प्रत्येक अर्द्धांश विलोमकाव्य युक्त

वारणागगभीरा सा साराभीगगणारवा ।
कारितारिवधा सेना नासेधा वरितारिका ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/४४)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२९९)

[अर्थ]

इस सेना का सामना करना बहुत मुश्किल है जिसमें बड़े-बड़े पर्वताकार हाथी हैं। यह सेना बहुत महान् है और भयभीत लोगों का क्रंदन सुनायी दे रहा है। इसने अपने शत्रुओं का वध कर दिया है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २२

प्रत्येक चतुर्थांश विलोमकाव्य युक्त

देवाकानिनि कावादे वाहिकास्वस्वकाहि वा ।
काकारेभभरेऽकाका निस्वभव्यव्यभस्वनि ।।

(मूल स्रोत : भारविकृत किरातार्जुनीयम्, १५/२५)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/३१०)

[अर्थ]

.... जो देवताओं को उत्साह देनेवाला रहता है, जिसमें वाक्-कलह बहुत थोड़ा-थोड़ा होता है, जो अवसर प्राप्त होने पर रणचातुरी द्वारा शत्रुओं को युद्ध में प्रयुक्त करने वाला है, मद बहाने वाले गजराज की घटा से व्याप्त रहता है, कौओं को आमंत्रण देने वाला होता है और निरुत्साहियों और उत्साहियों को समान रूप से परिश्रम कराने वाला है।

...

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २३

प्रत्येक चतुर्थांश विलोमकाव्य युक्त

सामायामामाया मासा मारानायायाना रामा ।
यानावाराराावानाया मायारामा मारायामा ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/८७)

[अर्थ]

वह जो प्रभूत विरह-ज्वर के द्वारा सन्तप्त करने वाली है, जो लक्ष्मी के समान सुन्दर है, कामदेव का उत्पादन-रूप जिसका आगमन होता है और जिसके पैरों पर आवेष्टित नूपुरों की मंजुल ध्वनि ही कामीजनों के लिए जाल के समान है, वह अति विचित्र मनोहर रूप वाली रमणी चन्द्र-निशा के साथ-साथ मेरे नाश के लिए है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २४

प्रत्येक चतुर्थांश विलोमकाव्य युक्त

सकारनानारकास कायसाददसायका ।
रसाहवावाहसार नादवाददवादना ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/२७)

[अर्थ]

उत्साहयुक्त अनेक प्रकार के शत्रु समूहों की गति एवं उनके शरीरों के नाश करने वाले बाणों से युक्त (वह शिशुपाल की) सेना रण में अनुरक्त होकर श्रेष्ठ घोड़ों की हिनहिनाहट एवं खटपट के साथ विवाद करने वाली अपने विविध वाद्यों की ध्वनियों से व्याप्त थी।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २५

प्रत्येक चतुर्थांश विलोमकाव्य युक्त

नानाजाववजानाना सा जनौघघनौजसा ।
परानिहाऽहानिराप तान्वियाततयाऽन्विता ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/४०)

[अर्थ]

सैनिक-समूहों से युक्त शिशुपाल की वह सेना उस अनेक प्रकार से होने वाले विचित्र युद्ध में अपने तेज द्वारा शत्रुओं की अवज्ञा कर निर्भयता एवं ढिठाई के साथ अपने प्रतिद्वंद्वियों पर जाकर जुट गयी।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २६

चारों चतुर्थांश समान, अर्थ भिन्न

समान यासमानया
स मानया समानया ।
समानयासमानया
समानयासमानया ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/७१)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/१५१)

[अर्थ]

हे सर्वत्र तुल्य यत्नशील या समदर्शी मित्र इस निरुपमा मानवती नायिका से हमें मिलाओ जो नायिका शोभा (लक्ष्मी) तथा विद्या (नीति) से युक्त है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २७

चारों चतुर्थांश समान, अर्थ भिन्न

सन्नाहितोमानमराजसेन
सन्नाहितोमानम राजसेन ।
सन्ना हितोमानमराजसेन
सन्नाहितो मानम राजसे न ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/६६)

[अर्थ]

हे सज्जन ! चन्द्र तथा उमा को धारण करनेवाले शिव आपके साथ हैं, आप परिमाण-रहित लक्ष्मी को धारण करने वाले हैं, लोभ आदि रजोगुणों के विकारों से रहित हैं, आपके शत्रु नष्ट हो गये हैं व आपके द्वारा विपक्षी राजसेना, सम्मान तथा लक्ष्मी-रहित की जा चुकी है, अतः आप युद्ध का उद्योग करते हुए शोभित नहीं होते हैं। आप सबके हित में रत हैं।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २८

चारों चतुर्थांश समान, अर्थ भिन्न

ललाममाधुर्यसुधाभिरामकं
ललाममाधुर्यसुधाभिरामकम् ।
ललाममाधुर्यसुधाभिरामकं
ललाममाधुर्यसुधाभिरामकम् ।।

(मूल स्रोत : स्वामी रामभद्राचार्यकृत श्रीभार्गवराघवीयम्, ३/२६)

[अर्थ]

उन्हें, जो (भगवान् शंकर) भाल पर त्रिपुण्ड के सौन्दर्य से शोभायमान हो रहे थे और जिनके आराध्य देव भगवान श्रीराम थे; उन्हें, जो आभूषणों की शोभा की धुरी (नवोदित चन्द्र के रूप में) धारण कर रहे थे और जो इस आनन्द से मनोहारी दृष्टिगत हो रहे थे; उन्हें, जो अपनी श्रेष्ठता की शक्ति के साथ धर्म के दायित्व के वाहक एवं रक्षक बने हुए थे; और उन्हें, जिन्हें वृषभ (जो धर्म का प्रतीक है) के चिह्न की दीप्ति के आनन्द के कारण भगवान श्रीराम की शरण प्रदान की गयी थी।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : २९

चारों चतुर्थांश समान, अर्थ भिन्न

विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा
विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणाः ।
विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणा
विकाशमीयुर्जगतीशमार्गणाः ।।

(मूल स्रोत : भारविकृत किरातार्जुनीयम्, १५/५२)

[अर्थ]

पृथ्वीपति अर्जुन के बाण विस्तार को प्राप्त होने लगे, जबकि शिवजी के बाण भंग होने लगे। राक्षसों के हंता प्रथम गण विस्मित होने लगे तथा शिव का ध्यान करने वाले देवता एवं ऋषिगण (इसे देखने के लिए) पक्षियों के मार्गवाले आकाश-मंडल में एकत्र होने लगे।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ३०

चारों चतुर्थांश समान, अर्थ भिन्न

सभासमानासहसापरागात्
सभासमाना सहसा परागात् ।
सभासमाना सहसापरागात्
सभासमाना सहसापरागात् ।।

(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/१४९)

[अर्थ]

एक-दूसरे से अविभक्त रूप से जुड़े लोगों की सुंदर सभा पर्वत से शीघ्रता से प्रस्थान कर गयी।

यह सभा आभा, स्वाभिमान, आनन्द और शत्रुओं के संहार की इच्छा से भासित थी।

यह प्रतिभाशाली लोगों से दीप्तिमान थी। मार्गशीर्ष माह के कारण वातावरण धूल से युक्त था।

यह समान कांतिवाले, शत्रुसंहार की इच्छावाले, शोभायुक्त सभा में उत्साहित लोगों के कारण धूल से पूरित थी।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ३१

पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध समान, अर्थ भिन्न

अयशोभिदुरालोके कोपधाम रणादृते ।

अयशोभिदुरा लोके कोपधा मरणादृते ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/५८)

[अर्थ]

भाग्यवान् एवं तेजस्वी होने के कारण कठिनाई से देखने-योग्य तथा रण-राग से क्रोधान्ध वीरों के लिए स्वामी द्वारा प्राप्त अनादर-रूपी अपयश को मिटाने के लिए (इस समय) प्राण त्यागने के सिवा और अन्य उपाय ही क्या था?

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ३२

पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध समान, अर्थ भिन्न

घन विदार्यार्जुनवाणपूग ससारवाणोऽयुगलोचनस्य ।

घन विदार्यार्जुनवाणपूग ससार वाणोऽयुगलोचनस्य ।।

(मूल स्रोत : भारविकृत किरातार्जुनीयम्, १५/५०)

[अर्थ]

तदनन्तर अचाक्षुष ज्ञान के विषय अर्थात् एकमात्र दिव्यदृष्टि से ही गम्य भगवान् शंकरजी ने बड़े वेग के साथ एक बाण छोड़ा, जो अत्यन्त हृदयविदारक शब्द करता हुआ उनके धनुष से बाहर निकला। उस बाण ने अर्जुन के असंख्य बाणों के समूह को काटकर फेंक दिया और फिर उसी क्षण विदारी, ककुभ, शरपुखा एवं सोपारी आदि की घनी लताओं को चीरता हुआ वह आगे चला गया।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ३३

प्रत्येक पंक्ति के दोनों चरण समान, अर्थ भिन्न

सदैव संपन्नवपू रणेषु
स दैवसंपन्नवपूरणेषु ।
महो दधेऽस्तारि महानितान्तं
महोदधेऽस्तारिमहा नितान्तम् ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/११८)

[अर्थ]

सर्वदा ही सम्पूर्ण शुभ लक्षणों से युक्त शरीर वाले एवं शत्रुओं के तेज का दलन करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने उस दैवी सहायता से युक्त रण में वह प्रचण्ड तेज धारण किया, जो महा-समुद्र के पार तक पहुँच गया था।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ३४

श्लोक १, अर्थ ३

जगतीशरणे युक्तो हरिकान्तः सुधासितः ।
दानवर्षी कृताशंसो नागराज इवावभौ ।।

(मूल स्रोत : भारविकृत किरातार्जुनीयम्, १५/४५)

[प्रथम अर्थ]

(नगराज हिमालय के पक्ष में) ईश अर्थात् शिव से युद्ध करने में तत्पर, सिंह के समान सुंदर, सम्यक् रीति से प्रजापालन करने वाले, कृष्णवर्ण, बहुदानी, युद्ध में विजय के अभिलाषी अर्जुन विधाता द्वारा पृथ्वी की रक्षा में नियुक्त, निवासस्थानादि के दान से सिंहों के प्रिय, (बरफ से ढके रहने के कारण) सुधा अर्थात् चूना के समान श्वेत, दानवों, ऋषियों तथा कामदेव से प्रशंसित नगराज हिमालय के समान सुशोभित हो रहे थे।

[द्वितीय अर्थ]

(नागराज ऐरावत के पक्ष में) पृथ्वी को अपनी शरण में रखने के लिए नियुक्त, इन्द्र के प्रिय, अमृत के समान शील-सदाचार से स्वच्छ शरीर वाले, दान की वर्षा करने वाले, युद्ध में विजय के अभिलाषी अर्जुन जगती अर्थात् पृथ्वी को क्षीण करने वाले राक्षसों के साथ युद्ध करने में तत्पर, इन्द्र के प्रिय, अमृत के समान श्वेत वर्ण वाले, मदवर्षा करने वाले एवं विजयाभिलाषी नागराज ऐरावत की भाँति शोभा पा रहे थे।

[तृतीय अर्थ]

(नागराज शेष के पक्ष में) विधाता द्वारा पृथ्वी की रक्षा करने में नियुक्त, कृष्ण के प्रिय, वसुधा अर्थात् पृथ्वी में निबद्ध अथवा अमृतवत स्वच्छ शरीर, दानवों, ऋषियों तथा लक्ष्मी द्वारा प्रशंसित अर्जुन विधाता द्वारा संसार की रक्षा में नियुक्त, विष्णु के प्रिय, अमृत के प्रेमी, दानवों, ऋषियों तथा लक्ष्मी से प्रशंसित नागराज शेष के समान सुशोभित हो रहे थे।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

चारों चरणों में भिन्न-भिन्न वर्ण

जजौजोजाजिजिज्जाजी
तं ततोऽतितताितुत् ।
भाभोऽभीभाभिभूभाभू-
रारारिरिरीररः ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/३)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२५९)

[अर्थ]

महान् योद्धा और महान् युद्धों के विजेता, शुक्र और बृहस्पति के समान तेजस्वी, घुमंतू शत्रुओं के विनाशक बलराम, शत्रुओं की गति को अवरुद्ध करने वाले शेर के समान रण में गये, जो चतुरंगिणी सेना से सुसज्जित थे।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ३६

मात्र २ वर्णों (स, र) का प्रयोग

सूरिः सुरासुरासारिसारः सारससारसाः ।
ससार सरसीः सीरी ससूरूः स सुरारसी ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/९४)

[अर्थ]

वह विद्वान् देव तथा दानवों पर अप्रतिहत प्रभाववाले, मदिराप्रिय बलदेवजी शोभन जंघाओं वाली अपनी स्त्री रेवती के साथ सशब्द सारस पक्षियों से युक्त तडाग (तालाब) में जलक्रीडा के लिए उतरे।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ३७

मात्र २ वर्णों (भ, र) का प्रयोग

भूरिभिर्भारिभिर्भीरैर्भूभारैरभिरेभिरे ।

भेरीरेभिभिरभ्राभैरभीरुभिरिभैरिभा: ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/६६)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२६१)

[अर्थ]

निर्भय हाथी, जो अपने भारी वजन के कारण भूमि पर भार स्वरूप था, जिसकी आवाज नगाड़े की तरह थी और जो काले बादलों जैसा था, उसने शत्रु हाथी पर आक्रमण किया।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ३८

मात्र २ वर्णों (भ, व) का प्रयोग

विभावी विभवी भाभो विभाभावी विवो विभीः ।
भवाभिभावी भावावो भवाभावो भुवो विभुः ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/८६)

[अर्थ]

(कृष्ण हैं) तेजस्वी, यशस्वी, दीप्तिमान, उत्कृष्ट, पक्षी पर आरूढ़, निर्भय, पुनर्जन्म से मुक्तिदाता, जीवन के संरक्षक, संसार से अनासक्त, पृथ्वी के शासक।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ३९

मात्र २ वर्णों (प, र) का प्रयोग

प्रापे रूपी पुराऽरेपाः परिपूरी परः परैः ।
रोपैरपारैरुपरि पुपूरेऽपि परोऽपरैः ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/९४)

[अर्थ]

पातकरहित परमपुरुष जिन भगवान श्रीकृष्ण ने पूर्वकाल में अनेक बार मत्स्य, कूर्म आदि अवतार धारणकर अपने भक्तों की कामनाएँ पूरी की थीं, उन्हें शत्रुओं ने अवरूद्ध कर लिया तथा उन्हें अनन्त बाणों से ऊपर से लेकर नीचे तक आच्छादित कर दिया।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४०

मात्र २ वर्णों (क, र) का प्रयोग

क्रूरारिकारि कोरेककारकः कारिकाकरः ।
कोरकाकारकरकः करीरः कर्करोऽर्करुक् ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/१०४)

[अर्थ]

क्रूर शत्रुओं को नष्ट करने वाला, भूमि का एक कर्ता, दुष्टों को यातना देने वाला, कमलमुकुलवत रमणीय हाथ वाला, हाथियों को फेंकने वाला, रण में कर्कश, सूर्य के समान तेजस्वी (था)।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४१

मात्र २ वर्णों (द, र) का प्रयोग

दारी दरदरिद्रोऽरिदारूदारोऽद्रिदूरदः ।
दूरादरौद्राऽददरद्रोदोरुद्दारुरादरी ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/१०६)

[अर्थ]

अनेक पत्नियों वाले, निर्भयचित्त, उदार हृदय पर्वत के समान दुर्भेद्य, सौम्य मूर्ति, समस्त चराचर जगत् में व्याप्त, दानशील तथा सन्मार्ग का आदर करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने दूर से ही शत्रुरूपी काष्ठों को विदीर्ण कर दिया।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४२

मात्र २ वर्णों (श, र) का प्रयोग

शूरः शौरिरशिशिरैराशाशैराशु राशिशः ।
शरारुः श्रीशरीरेशः शुशूरेऽरिशिरः शरैः ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/१०८)

[अर्थ]

दुष्टजनों को नियंत्रित करने वाले, लक्ष्मीदेवी के प्राणनाथ, शूरवीर भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने तीक्ष्ण एवं दिशाओं को व्याप्त करने वाले (असंख्य) बाणों द्वारा शीघ्र ही शत्रुओं के राशि-राशि शिरों को काट गिराया।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४३

मात्र २ वर्णों (न, ल) का प्रयोग

नीलेनानालनलिननिलीनोल्ललनालिना ।
ललनालालनेनालं लीलालोलेन लालिना ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/८४)

[अर्थ]

(अप्राप्त)

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४४

मात्र २ वर्णों (क, ल) का प्रयोग

लोकालोकी कलोऽकल्ककलिलोऽलिकुलालकः ।
कालोऽकलोऽकलिः काले कोलकेलिकिलः किल ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/९८)

[अर्थ]

(अप्राप्त)

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४५

मात्र २ वर्णों (व, र) का प्रयोग

वररोऽविवरो वैरिविवारी वारिरारवः ।
विववार वरो वैरं वीरो रविरिवौर्वरः ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/१००)

[अर्थ]

(अप्राप्त)

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४६

मात्र २ वर्णों (र, ज) का प्रयोग

राजराजी रुरोजाजेरजिरेऽजोऽजरोऽरजाः ।
रेजारिजूरजोर्जार्जी रराजर्जुरजर्जरः ।।

(मूल स्रोत : माघकृत शिशुपालवध, १९/१०२)

[अर्थ]

(अप्राप्त)

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४७

मात्र ३ वर्णों (द, व, न) का प्रयोग

देवानां नन्दनो देवो नोदनो वेदनिन्दिनाम् ।
दिवं दुदाव नादेन दाने दानवनन्दिनः ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/९३)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२६०)

[अर्थ]

वह परमात्मा (विष्णु) जो दूसरे देवों को सुख प्रदान करता है और जो वेदनिंदकों को कष्ट प्रदान करता है, वह स्वर्ग को उस ध्वनि नाद से भर देता है जिस तरह के नाद से उसने दानव (हिरण्यकशिपु) को मारा था।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४८

मात्र १ व्यंजन समूह (कंठ्य) के वर्णों का प्रयोग

अगा गाङ्गाङ्गकाकाङ्कगाहकाघककाकहा ।
अहाहाङ्ग खगाङ्कागकङ्कागखगकाकक ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/९१)
(उद्धरण स्रोत : भोजराजकृत सरस्वतीकण्ठाभरणम्, २/२७५)

[अर्थ]

ओह तुम (कई देशों में यात्रा करने वाले यात्री), जो लहरदार गंगा की टेढ़ी-मेढ़ी धारा में नहाता है, तुम्हे दुःखपूर्ण संसार की दुःख भरी ध्वनियों का कोई ज्ञान नहीं है, तुममें मेरु पर्वत तक जाने की क्षमता है, तुम कुटिल इंद्रियों के वश में नहीं हो। तुम, पाप को दूर करने वाले, इस धरा पर आ गये हो।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ४९

'मान' की पुनरावृत्ति से युक्त

श्रीमानमानमरवर्त्मसमानमान-
मात्मानमानतजगत्प्रथमानमानम् ।
भूमानमानमत यः स्थितिमानमान-
नामानमानमतमप्रतिमानमानम् ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/४४)

[अर्थ]

हे भक्तों ! उस लक्ष्मीवान् या शोभावान्, मर्यादावान्, अपरिमेय, अपरिमित नामवाले को, योगियों द्वारा जाने हुए को, अद्वितीय मानवाले को, जिसकी पूजा सम्पूर्ण विश्व करता है, जो आकाशवत् सर्वव्यापी है, उस महान् परमात्मा को प्रणाम करो।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ५०

'मया' की पुनरावृत्ति से युक्त

मयामयालम्ब्यकलामयामया-
मयामयातव्यविरामयामया ।
मयामयार्तिं निशयामयामया-
मयामयामूं करुणामयामया ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/४८)

[अर्थ]

कभी व्यतीत न होने वाले अवसान से युक्त प्रहर वाली और शोभा से रहित (अशोभनीय) तथा परिणाम से विहीन (सुदीर्घ) रात्रि के द्वारा क्षीणता (दुर्बलता) रूपी रोग की पीड़ा (कामपीड़ा) को प्राप्त हो गया हूँ। हे करुणमय (दयासम्पन्न, मित्र) कामपीड़ायुक्त (विरही) मेरे साथ घटते-बढ़ते आश्रय युक्त चन्द्रमा (को देखने) के कारण कामसन्तप्त हो जाने वाली उस (सुन्दरी) को मिला दो।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ५१

'काल' की पुनरावृत्ति से युक्त

कालकालगलकालकालमुखकालकाल-
कालकालपनकालकालघनकालकाल ।
कालकालसितकालका ललनिकालकाल-
कालकालगतु कालकाल कलिकालकाल ।।

(मूल स्रोत : दंडीकृत काव्यादर्श, ३/५०)

[अर्थ]

काले (नाग) के काल (परम शत्रु), गले में काल चिह्न से युक्त (नीलकण्ठ), काल (वर्ष) के मुख, (वर्षा) काल में बोलने वाले, काली (शिखा) सिर पर धारण करने वाले, (शिखी) मयूरों के बोलने के काल (वर्षा ऋतु) में काले मेघों वाला काल (वर्षा ऋतु) जिसके लिए मौत जैसा है, इस प्रकार के (तथा) कालों में काल (सब समयों में श्रेष्ठ ऋतुराज), कलियाँ और उन पर मँडराते भ्रमरों का समूह जिसके लिए काल (अत्यन्त कष्टदायी) है, इस प्रकार के हे मित्र, कालक (लहसुनिया या तिलचिह्न) से सुशोभित मुख से भूषित लाडली विलासिनी आ लगे (तुमसे संयुक्त हो)।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

अद्भुत संस्कृत, करे चमत्कृत : ५२

पाई का मान ३१ अंकों तक सहेजे श्लोक

गोपीभाग्यमधुव्रात-शृङ्गिशोदधिसन्धिग ।
खलजीवितखाताव गलहालारसंधर ।।

(मूल स्रोत : अज्ञात)

[अर्थ]

हे कृष्ण, गोपियों के भाग्य, राक्षस मधु के संहारक, मवेशियों के रक्षक, वह, जिसने समुद्र की गहराई में जाकर करतब दिखाया, पापियों का नाश करने वाले, कंधे पर हल धारण करने वाले और अमृत पात्र को धारण करने वाले (आप) रक्षा करें ।

(मर्म बात)

संस्कृत में एक संख्या प्रणाली है जिसे 'कटपयादि' प्रणाली कहा जाता है। यह प्रणाली कंप्यूटर विज्ञान में ASCII प्रणाली के समान है। वर्णमाला के हर वर्ण के लिए एक संख्या निश्चित की जाती है और जब श्लोक के अक्षरों को उन संख्याओं से बदल दिया जाता है, तो हमें एक मान की प्राप्ति होती है।

कटपयादि प्रणाली में प्रत्येक वर्ण का आंकिक मान इस प्रकार है :

१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म					
य	र	ल	व	श	ष	स	ह		

उपरोक्त विधि के आधार पर यदि उक्त श्लोक में अक्षरों को संबंधित संख्याओं द्वारा प्रतिस्थापित करते हैं, अर्थात् ३ से 'गो', १ से 'पी', ४ से 'भा', और इसी तरह करें तो निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होगा, ३१४१५९२६५३ ५८९७९३२३८४६ २६४३३८३२७९२ । यह संख्या स्पष्ट रूप से ३१ दशमलव स्थानों तक पाई का मान है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)